International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

थारू जनजाति के आजीविका संवर्धन में गैर. सरकारी संगठनों की भूमिका एवं प्रभाव पश्चिम चम्पारण ; वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व द्ध के संदर्भ में

Ms. Shalu Kumari[1], Mr. Vivek Kumar Badal[2]

[1]Ph.D Scholar, Department of Mass Communication and Media, Central University of South Bihar
[2]Social Activist, Wildlife Trust of India

सार

पुरे भारत में जितनी भी अनुसूचित जनजातियाँ हैं उनमे से एक प्रमुख जनजाति थारू जनजाति है जो विशेषकर बिहार तथा उत्तर प्रदेश सहित नेपाल के तराई क्षेत्रों में अधिवास करती हैण हमारे बिहार के पश्चिम चम्पारण जिले के वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व के समीप गौनाहाए मैनाटाढए रामनगरए बगहा.1 एवं बगहा.2 प्रखंडों में थारु जनजाति लाखों की जनसँख्या में निवास करती है।

सरकार द्वारा चलाई जा रही जितनी भी योजनाएं हैं जैसे. पीएम आवास योजनाए उज्ज्वला योजनाए जन.धन योजनाए वन अधिकार अधिनियम ;जो वर्तमान में बिहार में लागू नहींद्ध एवं कुछ गैर सरकारी संगठन द्वारा चलाई जा रही अन्य योजना भी पूर्ण रूप से इन तक नहीं पहुँच पा रही है।

इस शोध का उदेश्य थारू जनजाति के आजीविका संवर्धन में गैर.सरकारी संगठनों की भूमिका एवं प्रभाव का विश्लेष्ण करना हैण इसमें वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक की प्रविधि का उपयोग किया गया हैण्थारू समुदाय के ग्रामों में जाकर थारू परिवार एवम कुछ प्रमुख सुचना देने वाले गैर सरकारी संगठन जैसे .ॅज्ब्ॅथ सहित पत्रकारए जीविका दीदीए पंचायत प्रतिनिधिए गाँव के गुमास्ता से बात करने के उपरान्त निष्कर्ष में पाया गया की करीब 60: लोगों के पास स्मार्टफोन तथा घर में मीडिया हेतु ज्ट भी है लेकिन 30 से 35: लोगों के पास नियमित रूप से इंटरनेट नहीं है जिस कारण ये लोग योजना की सूचनाओं से वंचित है ण परन्तु क्षेत्र भ्रमण के दौरान पाया गया की सबसे विश्वसनीय सुचना का स्रोत आज भी ग्रामों में मुखियाए वार्डए गुमास्ताए आशाए जीविका दीदीए लोकल पत्रकार हैं। जबकि 40: ऐसे लोग हैं जिसमें से 20: दूसरों के घरो पर जाकर रेडियों तथा ज्ट से ख़बर या सुचना प्राप्त करते हैं ठीक वैसे हीं 20: लोग दुसरे के स्मार्टफोन में चलाये जा रहे सोशल मीडिया जैसे . वॉट्सऐपध्यूट्यूबध्इन्स्टाग्रामध्फ़ेसबुक इत्यादि से सुचना तथा योजनाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं।

कीवर्ड्स थारु जनजातिए आजीविका संवर्धन ए गैरसरकारी संगठन

प्रस्तावना

बिहार के पश्चिम चम्पारण जिले में अवस्थित एक मात्र वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के समीप भारत . नेपाल सीमा पर थारू जनजाति रहते हैंण 2011 जनगणना के अनुसार बिहार में थारुओं की जनसँख्या करीब 1 ;एकद्ध लाख थी परन्तु अभी थारुओं की जनसंख्या बढ़कर लगभग 3 ;तीनद्ध लाख पार कर गयी हैण थारू जनजाति के क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति तथा भाषा जैसे . थारूए हिन्दी मिला हुआ और शिक्षा नहीं होनें के कारण सरकारी तथा

गैरसरकारी योजनाओं का लाभ थारू समुदाय के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँच पाता हैए इसी क्रम में मीडिया को इस गैप को भरने का माध्यम माना जाता हैण्जैसे भारत नेपाल सीमा से सटे भारत में थारू समुदाय की एक आबादी है ठीक उसी प्रकार नेपाल में भी एक बड़ी आबादी थारू समुदाय की हैण इस समुदाय की आजीविका इनके परम्परागत रूप से कृषिए पशुपालनए हस्तशिल्पए स्थानीय मजदूरीए वनोपजए इत्यादि पारम्परिक गतिविधियों पर आधारित रही हैण अभी के वर्तमान समय में वैश्वीकरण सरकारी योजना या गैर सरकारी संगठनों ;छळव्द्ध की योजनाए तकनिकी विकासए सोशल मीडियाए की तमाम तरह की गतिविधियों नें थारू जनजाति की आजीविका के स्वरूप को बेहद प्रभावित किया हैण सोशल मीडिया ने सुचनाए मार्केटिंगए तथा संपर्क के नए और सरल अवसर उपलब्ध कराएं हैंए जबकि गैर.सरकारी संस्थाएं जैसे .ॅज्ए॑थ्र एवं अन्य इसमें अपनी सक्रीय भूमिका निभा रहें हैंण

वाल्मीकि टाइगर रिजर्व में दो गैर सरकारी संगठन॑ज्ञ एवं॑ध्र कार्य करती है जो पूर्ण रूप से जंगल के सटे थारू जनजाति के ग्रामों में उनके आजीविका संवर्धन हेतु विभिन्न तरह के कार्यों को करती है जिससे की उनका जंगल से निर्भरता कम हो सके और उनको एक आजीविका का अवसर प्राप्त हो सकेण इसके लिए इन्हें वन विभाग से आदेश प्राप्त होता है की आपको किन ग्रामों में कार्य करना है और वन विभाग उन्हीं ग्रामों का चयन करती है जहाँ थारू जनजाति के ग्रामों में आवागमन नेटवर्क एवं किसी अन्य प्रकार की सुविधा संसाधन नहीं हो जिसके चलते वहाँ के लोगों के पास आजीविका के साधन नहीं हो तत्पश्चात ऐसे ग्रामों का चयन कर इन सगठनों को मिलता हैण

उपरोक्त दोनों संगठन॑ज्ञ एवं॑ध्र सोशल मीडिया जैसे . इन्स्टाग्रामएफ़ेसबुकए यूट्यूबए वेबसाईटए वॉट्सऐप ग्रुप के ज़रिये थारू जनजाति के सभी ग्रामों में पहुँच रखी हैण थारू समुदाय में सोशल मीडिया जैसे वॉट्सऐपध्यूट्यूबध्इन्स्टाग्रामध्फ़ेसबुक डिजिटल माध्यम शामिल हैं। इनका उपयोग थारू समुदाय के उत्पादों के प्रचार एवं बाजार की जानकारी प्रशिक्षण तथा नए ग्राहकों से संपर्क स्थापित करने के लिए किया जा सकता है। बिहार के पश्चिम चम्पारण जिले के थारू जनजाति ग्रामों में जीविका ने भारत सरकार की विज्ञप्ति के अनुसार 24 जुलाई 2025 को यह प्रकाशित किया है की वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व के सटे थारू जनजाति क्षेत्र की 43 पंचायतों में जो कुल चार प्रखण्ड बगहा.2ए रामनगरए गौनाहाए मैनाटाढ शामिल हैण जिसमे 6378 स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लगभग 77871 परिवारो को उनके क्षमता विकास एवं आजीविका गतिविधियों से जोड़ा गया थाण

बिहार में जीविका थारू समुदाय के जीविकोपार्जन में मुख्यतः स्वयं सहायता समूहों के गठन कर महिलाओं को उनकी आर्थिक भागीदारी सहित कृषि और पशुपालनए स्वरोजगारए कौशल विकासए और वित्तीय सेवाओं तक पहुँच कर अपना योगदान देता हैण थारू जनजाति के क्षेत्रों में इसका सबसे बड़ा उदेश्य उन परिवारों की आय बढ़ाना और स्वरोजगार के अवसर को लाना हैण

जीविका द्वारा थारु जनजाति क्षेत्रों में उनके आजीविका संवर्धन हेतु चल रहे सरहानीय पहल निम्लिखित हैण

- महिलाओं को खाध पदार्थ की छोटी दूकान करा कर स्थानीय व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करना
- स्वयं सहायता समूह के माध्यम से वित्तिय संसाधनों तक पहुँच बनाने में सहायता करना
- बकरी पालन तथा गायए भैंस पालन हेतु कार्यों को बढ़ावा देना
- मतस्य पालन जैसे व्यवसाय हेतु आय के साधनों को प्रोत्साहित करना
- थारू जनजाति की महिलाओं को स्वयं सहायता समूह से जोड़ना
- सामूहिक लेन.देन में नियमित बचत को प्रोत्साहित करना
- स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आजीविका हेतु पहुँच बढ़ाना

वार्तामान में ैज् करीब सात ग्रामों में कार्य करती है जो पूरी तरह जंगल से सटे है जहाँ सुविधा संसाधन नेटवर्क की समस्या आज भी बनी रहती है।
मानपुर.पुरैनिया 2ण एकवा 3ण परसौनी 4ण पचरौता 5ण धुमाटाढ.जसौली 6ण रुपौलिया 7ण डुमरी ठीक उसी प्रकार ैए करीब पांच ग्रामों में कार्य करती है जहाँ उप्रोक्त सभी समस्या एक हीं तरह है।
मंगुराहा 2ण हरकटवा 3णजम्हौली 4ण बजनी 5ण सेमरी . डुमरी
ैज् ; वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया ब्द द्वारा वाल्मीकि टाइगर रिजर्व से सटे थारू जनजाति क्षेत्रो में चयनित चतवरमबज अपससंहम में उनके आजीविका संवर्धन हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर कार्य किया जाता है।

- हस्तकला रू मुंज घास से बनी टोकरीए डलियाए मोनाए चिड़ियाए डिश इत्यादि
- सामुदायिक नर्सरी रू 15 व्यक्ति का ैभ्ळ ग्रुप बना कर नर्सरी का संचालन होता है
- सामुदायिक मशरूम खेती रू 20 महिला दीदियों का ैभ्ळ ग्रुप बना कर मशरूम की खेती की जाती है।
- बायोगैस रू जिन परिवारों के पास गाय भैंस होता है और उनकी निर्भरता जलावन हेतु जंगल पर होती है वैसे चयनित परिवार को बायोगैस दिया जाता है।
- च्च्च् ; प्रेडीटर प्रूफ़ पेन ब्द रू वैसे परिवार जिनके पास ैउंसस सपअमेजवबा है जैसे बकरी आदि उनके इस आजीविका हेतु च्च्च् बकरी का बाडा बना कर दिया जाता है।
- उन्नत चूल्हा रू जिन परिवार के लोग जलवान हेतु जंगल पर निर्भरता रखते हैं उनको उन्नत चुल्हा दिया जाता है जिससे उनका जलावन कम खपत होता है इस कारण जंगल जाने से समय बचता है उस बचे समय में

ैए ; वर्ल्ड वाइड फंड ब्द द्वारा वाल्मीकि टाइगर रिजर्व से सटे थारू जनजाति क्षेत्रो में चयनित चतवरमबज अपससंहम में उनके आजीविका संवर्धन हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर कार्य किया जाता है।

- मधुमखी पालन रू 60 महिला दीदियों का ैभ्ळ ग्रुप बना कर मधुमक्खी पालन खेती किया जाता है।
- च्च्च् ; प्रेडीटर प्रूफ़ पेन ब्द रू वैसे परिवार जिनके पास ैउंसस सपअमेजवबा है जैसे बकरी आदि उनके इस आजीविका हेतु च्च्च् बकरी का बाडा बना कर दिया जाता है।
- हस्तकला रू मुंज घास से बनी टोकरीए डलियाए मोनाए चिड़ियाए डिश इत्यादि
- मुर्गी पालन रू वैसे गरीब परिवार जो जंगल पर अपनी निर्भरता रखते हैं उनको चयनित ग्रामों में मुर्गी दिया जाता है जो उनके लिए एक आजीविका का साधन है।
- उन्नत चूल्हा रू जिन परिवार के लोग जलवान हेतु जंगल पर निर्भरता रखते हैं उनको उन्नत चुल्हा दिया जाता है।
- नेचर गाइड प्रशिक्षण रू जंगल से सटे ग्रामों के युवक . युवतियों को नेचर गाइड का प्रशिक्षण दिला कर उन्हें वाल्मीकि टाइगर रिजर्व में पर्यटन स्थल पर रोजगार दिलवाया जाता है।
- सिलाई मशीन रू चयनित ग्रामों से बेटी . बहुओं को सिलाई प्रशिक्षण दिला कर उन्हें सिलाई मशीन दिया जाता है जिससे उनकी आजीविका चल सके।

देखा जाए तो गैर सरकारी संस्थाएं कौशल विकासए महिला सशक्तिकरणए शिक्षाए स्वास्थ्यए बैंकिंग सेवाएंए एवं आजीविका संवर्धन के क्षेत्र में पूर्णतः सहयोग कर सकती है।
इस संदर्भ में यह अध्ययन समझने का प्रयास करता है कि सोशल मीडिया और गैर.सरकारी संस्थाएँ थारू जनजाति की पारंपरिक आजीविका को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं तथा इसके माध्यम से आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की क्या संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं।

साहित्य समीक्षा

बिहार में जीविका बिहार सरकार के ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत संचालित होता है जो की बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसाइटी ;ठत्स्च्द्ध का कार्यक्रम है॰ इसका मुख्य उदेश्य ग्रामीण क्षेत्र में गरीब परिवार विशेष कर महिलाओं को स्वयं सहायता समुहों से जोड़कर उनके आजीविका में आय बढ़ाना तथा रोजगार के अवसर प्रदान करने के साथ आर्थिक रूप से उनको आत्मनिर्भर बनाना है॰

बिहार के पश्चिम चम्पारण जिले में निवास कर रही थारू जनजाति के जीविकोपार्जन के संदर्भ में बिहार जीविका की भूमिका को महिला सशक्तिकरणए स्वरोजगारए कृषिए सरकारी योजनाओं से जुड़नाए पशुपालन जैसे क्षेत्रों में देखा जा सकता है॰ वार्षिक प्रतिवेदन ;।दद्दनंस त्मचवतज 2024द्ध25द्ध

पश्चिम चम्पारण के वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व के सटे थारू समुदाय के ग्रामों में सन 2004 में डब्ल्यूटीआई द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार 74: जनजातीय ग्रामीण जलावन की लकड़ीए बांसए साबे घांसए मुंजएऔर छोटी लकड़ियों के लिए जंगलों पर निर्भर हैं। साथ हीं यह आबादी कृषिए परिवहन और दुग्ध उत्पादन जैसी आजीविका गतिविधियों के लिए पशुपालन एक सरल प्रथा है। लगभग 95: ग्रामीण 5 से अधिक मवेशी पालते हैंए जिसमें से 40: चराई और चारे के लिए जंगल पर निर्भर हैं। बाकि परिवारों के लिए कृषि आजीविका का प्राथमिक साधन है॰ ;ज्ए प्दकपंद्ध टंसउपाप त्मबवअमतल च्तवरमबजण्

वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व में डब्ल्यूटीआई वर्ष 2003 से बाघों की आबादी और टाइगर रिज़र्व के संरक्षित क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए कार्य कर रही है॰ यह संगठन टाइगर रिज़र्व प्रबन्धन ;पर्यावरणए वन एवं जलवायु परिवर्तन विभागए बिहार सरकारद्ध को वैज्ञानिक इनपुट देने के साथ . साथ ब्याघ्र परियोजना पर जनजातीय समुदाय के निर्भरता को कम करता है॰ इसी दौरान सन 2004 में डब्ल्यूटीआई ने इस क्षेत्र में बाघों की आबादी को पुनर्जीवित करने के लिए परियोजना का पहला चरण शुरू किया जिसमें दोन घाटी सहित टाइगर रिज़र्व के सीमावर्ती सभी जनजातीय ग्रामों पर ध्यान केन्द्रित किया॰

यह परियोजना पूरी तरह एक अलग विचारधारा के साथ आई क्यों की जनजातीय समुदाय के कल्याण में सुधार और एक स्थाई आजीविका प्रदान करने के लिए एक व्यापक 360 डिग्री दृष्टिकोण अपनाया जिसमें उनकी मानवीयए सामाजिक और आर्थिक पूंजी को बढाने के साथ . साथ टाइगर रिज़र्व पर उनकी निर्भरता को कम करना शामिल था॰ इन्ही सब पहलुओं पर ध्यान आकृष्ट कर के दोन घाटी के 26 गांवों में से 7 गांवों में वन पर निर्भरताए फसल क्षति और पशुधन पर होने वाले हमलों को कम करनेए गैर.कृषि आजीविका के अवसरों को बढ़ाने और संगठनात्मक क्षमताओं को मजबूत करने के लिए पर्यावरण विकास परियोजनाएं लागू की गईं। ;ज्ए प्दकपंद्ध टंसउपाप त्मबवअमतल च्तवरमबजण्

2018 में दोन घाटी में आर्थिक और सामाजिक परिणामों में स्वयं सहायता समूहों ;भ्छद्ध की भूमिका के संदर्भ में वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व का एक पक्षीय मूल्यांकन किया गया था। जिसमे डब्ल्यूटीआई ने ग्रामीण फाउंडेशन के बैंकर्स विदाउट बॉर्डर्स ;बीडब्ल्यूबीद्ध और मैरीलैंड विश्वविद्यालय के डू गुड इंस्टीट्यूट के साथ मिलकर दोन घाटी में वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व के स्वयं सहायता समूह सहभागिता के परिणामों और प्रभाव का आकलन किया। इनके सहभागिता का प्रभाव आर्थिक विकास ;जैसे कौशल विकास प्रशिक्षणद्धए घास बुनाई ;भारत सरकार की स्टेप परियोजनाद्धए पशुपालनए वित्तीय साक्षरताए बीज और सिंचाईए और ऊर्जा सुरक्षा ;जैसे बेहतर उन्नत चूल्हेद्ध पर देखा गया। इनकी सहभागिता प्रभावी पाए गइ और जनजातीय क्षेत्र में प्रयासों को बढ़ाने की सिफारिश की गई साथ ही परियोजना के वर्तमान चरण के लिए कुछ और सुधारों की योजना बनाई गई है। ;ज्ए प्दकपंद्ध टंसउपाप त्मबवअमतल च्तवरमबजण्

वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व में॰थ्.प्दकपं की प्रकाशित सामग्री ूममजमदपदह स्पअमसपीववकेए ब्वदेमतअपदह थ्वतमेजे वाल्मीकि टाइगर रिजर्व क्षेत्र में मधुमक्खी पालन को वैकल्पिक आजीविका के रूप में प्रस्तुत करती है। इस कारण जंगल

के किनारे रहने वाले समुदायों की शहद और जलवान की लकड़ी जैसे वन संसाधनों पर निर्भरता तथा मानव. वन्यजीव संघर्ष का उल्लेख है। ैथ्प्दकपं के अनुसारए ज्ञॉ और प्न्छछ के सहयोग से संचालित प्दजमहतंजमक ज्पहमत भ्इपजंज ब्वदेमतअंजपवद च्तवहतंउउम ;प्ज्भ्ब्द्ध तथा भ्नउइसमइमम के सहयोग और ;पर्यावरणए वन एवं जलवायु परिवर्तन विभागए बिहार सरकारद्ध के साथ मिलकर सतत आजीविका विकल्पों को बढ़ावा देने का कार्य किया गयाण ैथ्प्दकपंद्ध

वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व के सटे ग्रामों में जैसे . हरकटवाए बजनीए डुमरी और जमहौलीए मंगुरहा नामक पाँच गाँवों के 60 परिवारों के मधुमक्खी पालन में भाग लेने की जानकारी दी गई है। उन सभी परिवारों को मधुमक्खी पालन के बक्सेए उपकरण और प्रशिक्षण प्रदान किए जाने का उल्लेख है। साथ हीं सामग्री के अनुसार मार्च 2025 में आयोजित चार दिवसीय तकनीकी प्रशिक्षण में 92 ग्रामीणों ने भाग लिया इसके अतिरिक्त 2025 के पहले उत्पादन में कुल 462 किलोग्राम शहद प्राप्त होने तथा औसतन 7ण्7 किलोग्राम प्रति परिवार उत्पादन का उल्लेख किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है की ये आँकड़े कार्यक्रम की गतिविधियों और प्रारंभिक उत्पादन के बारे में जानकारी देते हैंण ैथ्प्दकपंद्ध

पश्चिमी चंपारण के थारू बहुल गाँवों में घरेलू बगीचों के माध्यम से फल और सब्जियों का उत्पादन बढ़ाने तथा महिलाओं को वर्मीकम्पोस्ट तथा मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण देने का विवरण है। इसके अनुसार प्रशिक्षण ली हुई चयनित महिलाओं की कृषि आय में 20 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई है। यह दर्शाता है कि
छोटे कृषिक भी परिवार के भोजन तथा स्थानीय बिक्री और महिलाओं की आर्थिक भूमिका से संबंधित हो सकते हैं।

इस अध्ययन से यह विचार भी सामने आता है कि आजीविका संवर्धन के लिए केवल नई गतिविधि शुरू करना आवश्यक नहीं है परन्तु मौजूदा कृषि प्रणाली में सुधारए बेहतर किस्मों का उपयोगए कौशल विकास और स्थानीय बाजार से जुड़ाव भी बेहद महत्त्वपूर्ण माना जा सकता हैं। ;2023द्ध च्ंजमसए च्वदहमदमतए ैतपअेंजंअंण

शोध उदेश्य

- थारू समुदाय की पारंपरिक एवं वर्तमान आजीविका के स्वरूप का अध्ययन करना
- थारू समुदाय के आजीविका हेतु अवसरों को बढ़ाने में सोशल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना
- थारू समुदाय के ग्रामों में गैर.सरकारी संस्थाओं के योगदान और कार्यप्रणाली को समझना
- थारू समुदाय के महिलाओंए युवाओं और छोटे उत्पादकों पर इन माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना
- थारू समुदाय के ग्रामों में डिजिटल विभाजनए बाजार तक सीमित पहुँच जैसी चुनौतियों की पहचान करना
- थारू समुदाय की सतत एवं आत्मनिर्भर आजीविका के लिए सुझाव प्रस्तुत करना

शोध क्षेत्र एवं शोध प्राविधि

इस शोध पत्र में अध्ययन के लिए बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले के एक मात्र वाल्मीकि टाइगर रिजर्व से सटे थारू समुदाय के गांवों को शामिल किया गया है जहाँ दो गैर सरकारी संगठन ैज्ञ एवं ैथ थारू समुदाय के आजीविका संवर्धन के लिए कार्य करती है साथ हीं दोनों संगठनों के माध्यम से स्थानीय समुदाय को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि उनकी जंगल पर निर्भरता कम हो सके और उनके आजीविका हेतु रोजगार का अवसर निकल सके। साथ हीं जीविका थारू जनजाति क्षेत्रों में उनके आजीविका संवर्धन हेतु कई योजनाओं को लेकर उनके क्षेत्रों में कार्य कर रही हैण इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया हैए इसमें डेटा को एकत्रित करने के लिए द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से ैज्ञ एवं ैथ की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से और शोध पत्रों तथा पुस्तकों से डेटा एकत्रित किया गया है ।

निष्कर्ष एवं सुझाव

बिहार के एक मात्र जिला पश्चिम चम्पारण में थारू जनजाति के संदर्भ में ॅज्ॅ;पसकसपमि ज्तनेज वि प्दकपंद्ध तथा ॅथ ॅ;वतसक ॅपकम थ्नदकद्ध के कार्यों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि इन संगठनो ने थारू जनजाति के आजीविका को मजबूत करने एवं पारंपरिक कौशल को प्रोत्साहित करने तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा मानव.वन्यजीव संघर्ष को कम करने की दिशा में योगदान दिया है। ठीक उसी प्रकार जीविका थारू समुदाय के आजिविकोपार्जन में स्वयं सहायता समूह का गठन तथा महिलाओं की आर्थिक भागीदारी सहित पशुपालनए कृषिए स्वरोजगारए कौशल विकास और उनके वितीय सेवा तक पहुँच के माध्यम से योगदान देती हैण इसका बड़े स्तर पर उदेश्य ये है की सुदूर क्षेत्रों के गरीब परिवार की आय बढ़ाना और रोजगार के अवसर को विकसित करने के साथ उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना हैण

सुझाव

- अन्य वैकल्पिक आजीविका का माध्यम शुरू करना होगा
- हस्तकला को बढ़ावा देकर मार्केटिंग का माध्यम बनाना होगा
- ज्ञटज्ञ के द्वारा उन्नत खेती का प्रशिक्षण देना होना
- उन्नत खाद बीज से किसानों को खेती कराना होगा
- शिक्षा हेतु जागरुकता अभियान करना होगा

संदर्भ सूची

1ण च्जमसए त्ण ज्ञण्ए च्वदहमदमतए ।ण्ए ैतपअेंजंअंए ज्ञण्ए च्ंदकमलए ैण क्ण्ए ज्ञनउंतए ।ण्ए डपैीतंए च्ण ज्ञण्ए च्ंदकमलए ।ण ज्ञण्ए – छंजीए टण ;2023द्धण भ्वतजपबनसजनतंस पदजमतअमदजपवदे पद पउचतवअपदह सपअमसपीववक वि जतपइंस तिवउ ूवउमद पद ठपींतण प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि ठपव.त्मेवनतबम ंदक ैजतमे डंदंहमउमदजए 14;3द्धए 429दृ435ण
ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10ण23910ध्1ण3266

2ण ॅपसकसपमि ज्तनेज वि प्दकपंण ;दण्कण्.द्ध टंसउपाप त्मबवअमतल च्तवरमबजण
ीजजचेरूध्ध्ूजपण्वतहण्पदध्चतवरमबजेध्अंसउपाप.तमबवअमतल.चतवरमबजध्

3ण ॅपसकसपमि ज्तनेज वि प्दकपंण ;दण्कण्.इद्धण टंसउपाप अपससंहमते.ंबुनपतम मबव.कमअमसवचउमदज ीपससेण
ीजजचेरूध्ध्ूजपण्वतहण्पदध्दमेूध्अंसउपाप.अपससंहमते.ंबुनपतम.मबव.कमअमसवचउमदजे.ापससेध्

4ण ॅथ.प्दकपंण ;दण्कण्द्धण ूमजमदपदह सपअमसपीववकेए बवदेमतअपदह वितमेजेरू जैम ंजवतल वि चपबनसजनतम पद टंसउपाप ज्पहमत त्मेमतअमण
ीजजचेरूध्ध्ूपिदकपंण्वतहध्ू.पिदकपं.नचकंजमेधमिंजनतमत्रे.जवतपमेध्ेमजमदपदहत्रसपअमसपीववकत्रबवदेमतअपदहत्रवितमेजेध्

5ण ीजजचेरूध्ध्इतसचेण्पदध्ंददनंसंनकपजतमचवतजेघ्नजउत्रेवनतबमत्रबींजहचजण्बवउ